AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

2011-2022 के पेपर्स का विश्लेषण चार्ट का समावेश

CTET 2022

केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

NCERT पैटर्न पर आधारित

संस्कृत

PAPER-I (कक्षा 1 से 5 के लिए)
PAPER-II (कक्षा 6 से 8 के लिए)

Best Text book!

इस पुस्तक की थ्योरी CTET 2021 व 2022 के पाठ्यक्रम एवं विगत् वर्षों में पूछे गये प्रश्नों पर आधारित है।

इस पुस्तक का गहन अध्ययन करने से आप आगामी CTET परीक्षा के संस्कृत के प्रश्नों को आसानी से हल कर सकते हैं।

NEW **4 in 1 Textbook**

- सम्पूर्ण थ्योरी CTET पाठ्यक्रम एवं विगत वर्षों के प्रश्नों पर आधारित
- वर्ष 2011 से 2021 तक के सभी प्रश्न अध्यायवार एवं व्याख्यात्मक हल सहित
- अभ्यास प्रश्नों का अध्यायवार समावेश
- 23 दिस. 2021, 3 जन. 2022 और 7 जन. 2022 के CTET पेपर्स के संस्कृत विषय के प्रश्नों का हल सहित समावेश।

Code	Price	Pages
CB923	₹ 339	430

विषय-सूची

Student's Corner *पृष्ठ संख्या*

⊙ **Agrawal Examcart Help Centre** v
⊙ **परीक्षा की तैयारी करने की Best Strategy** vi
⊙ **Current Affairs! की 100% सटीक तैयारी कैसे करें ?** vii
⊙ **C-TET के पिछले वर्षों के हल प्रश्न–पत्रों का विश्लेषण चार्ट** viii

संस्कृत 1-403

1. संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास 1-13
2. संस्कृत साहित्य में भारतीय दर्शन 14-22
3. भाषा–विज्ञान 23-29
4. व्याकरण : वर्ण–परिचय, संज्ञा प्रकरणम् 30-37
5. शब्द–विचार (सुबन्त–प्रकरण) 38-54
6. धातु रूप 55-70
7. अव्यय पद 71-81
8. उपसर्ग 82-86
9. प्रत्ययः 87-102
10. सर्वनाम, विशेषण, लिंग तथा वाच्य–ज्ञान 103-113
11. सन्धि–प्रकरण 114-128
12. समास प्रकरणः 129-140
13. विलोम शब्दः 141-151
14. पर्यायवाची शब्दः 152-156
15. समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द एवं वाक्य प्रयोग 157-160
16. विभिन्न वस्तुओं के संस्कृत में नाम (घर, परिवार, परिवेश, पशु, पक्षियों, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ) 161-182
17. शरीर के प्रमुख अंगों के संस्कृत में नाम 183-185
18. संस्कृत अनुवादः 186-197
19. अशुद्धि–संशोधनम् 198-209
20. महत्वपूर्ण संस्कृत सूक्तियाँ एवं काव्य पंक्तियाँ 210-217
21. अपठित गद्यांशः 218-263
22. अपठित पद्यांशः 264-282
23. भारतीय काव्यशास्त्र 283-309
24. संस्कृत भाषा शिक्षण 310-403

सॉल्व्ड पेपर्स

- **केन्द्रीय शिक्षक पात्रता (कक्षा 6 से 8) परीक्षा, 2022 हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 07-01-2022** **1-3**
- **केन्द्रीय शिक्षक पात्रता (कक्षा 1 से 5) परीक्षा, 2021 हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 23-12-2021** **4-9**
- **केन्द्रीय शिक्षक पात्रता (कक्षा 6 से 8) परीक्षा, 2021 हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 23-12-2021** **10-12**

अध्याय 6

धातु रूप

जैसा कि हम जानते हैं कि विभक्ति–युक्त शब्द पद कहलाते हैं। पुनः सुप्तिङन्तम् पदम् सूत्र के अनुसार सुप् विभक्ति और तिङ् विभक्ति से युक्त पद दो प्रकार के हुए। संस्कृत–व्याकरण में सभी सार्थक शब्दों/पदों को तीन वर्गों में बाँटा गया है–1. संज्ञा–पद, 2. क्रिया–पद और 3. अव्यय–पद। क्रिया–पद वे होते हैं, जो किसी कर्ता के काम या कुछ करने को बताते हैं।

जैसे–रामः पुस्तकं पठति। (राम पुस्तक पढ़ता है)

इस वाक्य में 'रामः' कर्ता है, 'पुस्तकम्' कर्म–पद है और 'पठति' क्रिया–पद है, क्योंकि 'राम'–रूप कर्ता के कुछ करने (पढ़ने) को यही बताता है।

किसी भी क्रिया–पद का निर्माण 'धातु' और 'प्रत्यय' के मिलने से बनता है। उदाहरण के लिए 'पठति' में 'पठ्' मूल धातु है और 'ति' (तिप्) प्रत्यय है। इन दोनों के मिलने से ही 'पठति' रूप बनता है। जैसे–

पठ्+शप्+तिप् = पठ्+अ+ति = पठति (पढ़ता है।)

1. तिङ् प्रत्यय

क्रिया–पदों के निर्माण के क्रम में मूल धातुओं के साथ जुड़ने वाले ये 'तिप्', 'तस्', 'झि' इत्यादि कुल 18 प्रत्यय हैं। इनमें प्रारंभ में 'तिप्' प्रत्यय है और अंत में 'महिङ्' प्रत्यय है। इन 18 प्रत्ययों को एक साथ बताने वाले सूत्र के रूप में पहले प्रत्यय 'तिप्' का 'ति' ले लिया गया है तथा अंतिम (18वें) प्रत्यय 'महिङ्' का 'ङ्' और दोनों को मिलाकर 'तिङ्' प्रत्यय (या प्रत्यय–समूह) का बोध कराया गया है।

इनसे बने पदों को 'तिङन्त' कहते हैं। तिङन्त का अर्थ होता है–तिङ् है जिसके अंत में, अर्थात् संस्कृत के क्रिया–पद। प्रकरण 'अध्याय' को कहते हैं। 'तिङन्त–प्रकरण' में इस बात पर विचार किया जाता है कि मूल धातुओं में किन प्रत्ययों के लगने से कौन–सा क्रिया–पद बना एवं उन क्रिया–पदों का 'पुरुष', 'वचन' और 'काल' की दृष्टि से क्या रूप और अर्थ होता है।

तिङ् प्रत्यय से युक्त पद भी दो प्रकार के होते हैं–

1.1 परस्मैपद और 1.2 आत्मनेपद।

1.1 परस्मैपद–जिस वाक्य में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसमें परस्मैपदीय क्रिया–पद का प्रयोग होता है।

1.2 आत्मनेपद–जिस वाक्य में क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है, उसे आत्मनेपदीय क्रिया–पद कहते हैं।

शब्दों का निर्माण–शब्द चाहे संज्ञा–पद हो या क्रिया–पद, इनका निर्माण प्रकृति और प्रत्यय के मिलने से ही होता है। मूल धातु–पद को 'प्रकृति' कहते हैं और इनके अंत में लगने वाले शब्दांश को प्रत्यय कहते हैं। धातुओं के साथ लगने वाले 'तिङ्' प्रत्यय, जो संख्या में 18 हैं, निम्नांकित हैं–

1.1 परस्मैपद

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिप् (ति)	तस्	झि
मध्यम पुरुष	सिप् (सि)	थस्	थ
उत्तम पुरुष	मिप् (मि)	वस्	मस्

1.2 आत्मनेपद

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इट् (इ)	वहि (महि)	महिङ्

पुरुष–पुरुष व्यक्ति को कहते हैं। कोई बात जब किसी को कही जाती है, तब उसके तीन पक्ष होते हैं–

जैसे–'सुप्' प्रत्यय, जो संख्या में 21 हैं, संज्ञा–पदों में जुड़ने से उनके कारक और वचन को बतानेवाली रूपावलि सामने आती है। विभक्तियों में बँटे उनके इन रूपों में प्रत्येक विभक्ति में तीन वचन होते हैं। वैसे ही 'तिङ' प्रत्यय भी 'पुरुष' में बँटे होते हैं और प्रत्येक 'पुरुष' में तीन वचन होते हैं। जैसे–

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

उपर्युक्त रूपावलि 'पुरुष' और 'वचन' दोनों को बता रही है।

इन क्रिया–पदों के अपने कर्ता–पदों के साथ प्रायोगिक रूप इस प्रकार होंगे–

- सः पुस्तकं पठति। (वह पुस्तक पढ़ता है।)
- तौ पुस्तकं पठतः। (वे दोनों पुस्तक पढ़ते हैं।)
- ते पुस्तकं पठन्ति। (वे सब पुस्तक पढ़ते हैं।)
- त्वं पुस्तकं पठसि। (तुम पुस्तक पढ़ते हो।)
- युवां पुस्तकं पठथः। (तुम दोनों पुस्तक पढ़ते हो)
- यूयं पुस्तकं पठथ। (तुम सब पुस्तक पढ़ते हो।)
- अहं पुस्तकं पठामि। (मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।)
- आवां पुस्तकं पठावः। (हम दोनों पुस्तक पढ़ते हैं।)
- वयं पुस्तकं पठामः। (हम लोग पुस्तक पढ़ते हैं।)

I. परस्मैपद–आत्मनेपद–उभयपद धातुएँ

संस्कृत के धातु–पदों में लगने वाले उपर्युक्त 18 'तिङ्' प्रत्ययों में प्रथम 9 प्रत्यय परस्मैपद के हैं और बाद के 9 प्रत्यय आत्मनेपद के।

संस्कृत में धातु–पदों के तीन वर्ग हैं–

(i) परस्मैपदी धातु–जिन धातुओं में तिप्, तस्, झि; सिप्, थस्, थ, मिप्, वस् और मस् आदि 9 प्रत्यय लगते हैं, उन्हें परस्मैपदी धातु कहते हैं।

(ii) आत्मनेपदी धातु–जिन धातुओं में त, आताम्, झ; थास्, आथाम्, ध्वम्; इट्, वहि और महिङ् आदि 9 प्रत्यय लगते हैं, उन्हें आत्मनेपदी धातु कहते हैं।

(iii) उभयपदी धातु–उभय का अर्थ होता है–दोनों। अर्थात् जिन धातुओं में परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों के प्रत्यय लगते हैं, अर्थात् उपर्युक्त सभी 18 प्रत्यय लगते हैं, उन्हें उभयपदी धातु कहते हैं।

II. धातुओं के 'विकरण'

'विकरण' उस वर्ण या वर्ण–समूह को कहते हैं, जो प्रकृति और प्रत्यय के मध्य में जुड़ता है, जिससे संपूर्ण क्रिया–रूप सामने आ सके।

प्रकृति + विकरण + प्रत्यय	क्रिया–पद
• भू + शप् (अ) + तिप् (ति)	भवति
• दिव् + श्यन् (य) + तिप् (ति)	दीव्यति
• सु + श्नु (नु) + तिप् (ति)	सुनोति
• तन् + उ + तिप् (ति)	तनोति
• चुर् + णिच् + शप् (अय) + तिप् (ति)	चोरयति

उपर्युक्त उदाहरणों में शप्, श्यन्, श्नु, उ, णिच् इत्यादि विकरण हैं। इनके बीच में आने पर ही मूल धातु (प्रकृति) और प्रत्यय मिलकर सार्थक क्रिया–पदों का निर्माण करते हैं। विकरण की कुल संख्या 10 है। उनके नाम हैं–

1. शप् (अ), 2. शप्–लुक् (0), 3. शप्–श्लु (0), 4. श्यन् (य), 5. श्नु (न), 6. श (अ), 7. श्नम् (न), 8. उ, 9. श्ना (ना) और 10. णिच् + शप् (अय)।

धातुओं के 'गण'

'गण' का अर्थ होता है–'समूह'। संस्कृत में धातु–रूप बनाने के समय सभी धातुओं में कोई–न–कोई विकरण अवश्य लगते हैं। कुछेक धातुओं में एक जैसा 'विकरण' लगता है, उन सबको एक 'गण' का या एक 'गण' में मान लिया गया है। कुल दस 'गण' हैं, जो विकरण की संख्या के समानांतर हैं। इन दस गणों में प्रत्येक के प्रारंभ में जिस धातु के नाम का पाठ किया जाता है या उस गण का प्रधान धातु हैं, उसी के नाम पर उस 'गण' का नामकरण किया गया है। ये दस 'गण' हैं–1. भ्वादि ('भू' आदि), 2. अदादि ('अद्' आदि), 3. जुहोत्यादि ('हु' आदि), 4. दिवादि ('दिव्' आदि), 5. स्वादि ('सु' आदि), 6. तुदादि ('तुद्' आदि), 7. रुधादि ('रुध्' आदि), 8. तनादि ('तन्' आदि), 9. क्र्यादि ('क्री' आदि) एवं 10. चुरादि ('चुर्' आदि)।

किस गण के साथ कौन–सा विकरण लगता है, उसे नीचे उदाहरण के साथ स्पष्ट किया गया है–

धातु–गण	विकरण	उदाहरण
1. भ्वादिगण	शप् (अ)	भू+शप् (अ)+ति = भवति
2. अदादिगण	शप्–लुक् (०)	अद्+शप्(०):+ति=अत्ति
3. जुहोत्यादिगण	शप्–श्लु (०)	जुह्+शप् (0) = जुहोति
4. दिवादिगण	श्यन् (य)	दिव्+श्यन् (य)+ति= दीव्यति
5. स्वादिगण	श्नु (नु)	श्नु+(नु)ति = सुनोति
6. तुदादिगण	श (अ)	तुद्+श(अ)+ति=तुदति
7. रुधदिगण	श्नम् (न)	रुध्+श्नम्(न)+ति = रुणाद्धि
8. तनादिगण	उ	तन्+उ+ति = तनोति
9. क्र्यादिगण	श्ना (ना)	क्री+श्ना(ना)+ति = क्रीणाति
10. चुरादिगण	णिच्+शप् (अय)	चुर+णिच्+शप् (अय) + ति = चोरयति

इन 'गणों' की भिन्नता से एक–जैसे दिखाई पड़ने वाले धातुओं के रूप भी भिन्न–भिन्न हो जाते हैं। इस क्रम में कई बार अर्थ नहीं बदलते हैं, पर कई बार अर्थ बदल भी जाते हैं। जैसे–

भ्वादिगण में 'अर्च्' धातु के साथ 'शप्' (अ) विकरण लगाने पर पद बनेगा–अर्च्+शप् (अ) ति = अर्चति (पूजा करता है।)

पुनः यदि इनमें चुरादिगण की तरह णिच् और शप् विकरण लगाएँ तो पद बनेगा–अर्च्+जिच्+शप् (अय)+ति = अर्चयति (पूजा करता है)। इसी तरह अन्य उदाहरण भी देखें–

भ्वादिगण अर्ज+अ+ति = अर्जति अर्जन करता है।
चुरादिगण अर्ज्+अय+ति = अर्जयति अर्जन करता है।

इस प्रकार 'कृ' धातु का रूप भ्वादिगण में बनाने पर शप् (अ) विकरण लगेगा और वर्तमानकाल (लट्लकार) में प्रथम पुरुष एकवचन में रूप बनेगा–कृ+शप्+ति=करोति (करता है।)

पुनः इसका रूप तुदादिगण में बनाने पर श(अ) विकरण के साथ रूप बनेगा कृ+श(अ)+ति=किरति (बिखेरता है) फिर इसी धातु का रूप क्रियादिगण में बनाने पर श्ना(ना) विकरण लगकर 'कृणाति' रूप बनेगा, जिसका अर्थ हिंसा करना होता है।

2. संस्कृत क्रिया–पदों के 'काल' (Tense)

क्रिया के संपादन में जो समय लगता है, उसे काल कहते हैं। किसी भी क्रिया का कर्त्ता उसे तीन समयों में ही करता है। ये हैं–

2.1 भूतकाल

वह समय, जो बीत गया। जैसे–अहम् अपठम्। (मैंने पढ़ा) इसके तीन भेद हैं–

(I) सामान्य भूतकाल–जो समय बीता ही हो।
इसमें लुङ्लकार का प्रयोग होता है। जैसे–अद्य सुष्ठु वृष्टिः अभूत। (आज अच्छी वर्षा हुई।)

(II) अनद्यतन भूतकाल–जो समय आज के पहले बीता हो।
जैसे–ह्यः वृष्टिः अभवत्। (कल वर्षा हुई थी।) इसमें लङ्लकार का प्रयोग होता है।

(III) परोक्ष अनद्यतन भूतकाल–जो आज के पहले और बहुत पहले बीता हो। जैसे–राम–रावणयोः युद्ध बभूव। (राम–रावण में युद्ध हुआ था।) इसमें लिट्लकार का प्रयोग होता है।

2.2 वर्तमानकाल

वह समय, जो बीत रहा है। लकार के अनुसार वर्तमानकाल का एक ही रूप है–लट्लकार। तात्कालिक वर्तमान काल का रूप बनाने के लिए प्रत्यय का प्रयोग करते हैं। अद्य वृष्टिः भवति। (आज वर्षा होती है।) वर्तमान काल में लट्लकार का प्रयोग होता है।

2.3 भविष्यत्काल

वह समय, जो आने वाला है। भविष्यत्काल के तीन भेद हैं–

(I) सामान्य भविष्यत्काल–जो समय आजकल में आनेवाला हो। जैसे–अद्यवृष्टिः भविष्यति। (आज वर्षा होगी)। इसमें लृट्लकार का प्रयोग होता है।

(II) अनद्यतन भविष्यत्काल–जो समय आज के बाद आनेवाला हो। इसमें लुट्लकार का प्रयोग होता है। जैसे–श्वः वृष्टिः भविता। (कल वर्षा होगी) इसमें लुट्लकार का प्रयोग होता है।

(III) हेतुहेतुमद् भविष्यत्काल–एक समय में होनेवाली एक क्रिया के बाद संभावित दूसरी क्रिया का काल हेतु हेतुमद् भविष्यत् कहलाता है। इसमें लुङ्लकार का प्रयोग होता है। जैसे–यदि सुवृष्टि अभविष्यत् तर्हि सुभिक्षम् अभविष्यत्। (यदि अच्छी वर्षा होगी तो फसल भी अच्छी होगी।)

इस प्रकार काल–भेद के अनुसार संस्कृत में (3+3+1=7) सात क्रिया–रूप हैं। काल के उपर्युक्त रूपों के अतिरिक्त संस्कृत में क्रिया–रूपों के तीन प्रकार और हैं–

(i) जिससे आदेश आदि सूचित होता है। जैसे–(क) भवान् संस्कृतं पठतु। (आप संस्कृत पढें।) (ख) तव कल्याणं भवतु। (तुम्हारा कल्याण हो) इसमें लोट्लकार का प्रयोग होता है।

(ii) जिससे अनुज्ञा, आशीर्वाद या कल्याण–कामना सूचित होती है। जैसे–(क) अनुज्ञा या विधिपरक–भवान् मम सहचरो भवेत्। (आप मेरे सहायक हों।) (ख) आशीर्वाद या कल्याण– कामनापरक–तव कल्याणं भूयात्। (आपका कल्याण हो) इसमें विधिलिङ् तथा आशीर्लिङ् लकार का प्रयोग होता है।

(iii) जो लौकिक संस्कृत में नहीं, वैदिक संस्कृत में ही पाया जाता है। जैसे–लेट्लकार का प्रयोग।

'क्रिया' के इन दसों रूपों को संस्कृत में लकारों के सहारे व्यक्त किया जाता है। दूसरे शब्दों में काल एवं अवस्था बोधक शब्द लकार हैं। अर्थात् संस्कृत में क्रिया–पदों की काल–रचना ही लकार है और संस्कृत में उपर्युक्त दस लकार हैं।

3. परस्मैपद धातुओं की रूपावलि

'भू' धातु का अर्थ होता है 'होना'। लकारों के भेद के कारण इसके रूप और अर्थ (काल–बोध कराने की दृष्टि से) बदलते जाएँगे, जैसे–1. लट्–भवति (होता है), 2. लुङ्–अभूत् (हुआ), 3. लङ्–अभवत् (आज के पहले हुआ), 4. लिट्–बभूव (बहुत पहले हुआ), 5. लृट्–भविष्यति (होगा), 6. लुट्–भविता (आज के बाद होगा), 7. लृङ्–अभविष्यत् (यदि होगा), 8. लोट्–भवतु (होओ, होइए), 9. विधिलिङ्–भवेत् (हो, हों, होवे) और 10. आशीर्लिङ्ग–भूयात् (हुआ करे)।

3.1 परस्मै धातु रूप

I. पठ् (पढ़ना) लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

II. गम् (जाना) लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

III. अस् (होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु/स्तात्	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि/स्तात्	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

IV. शक् (सकना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	शक्नोसि	शक्नुथः	शक्नुथ
उत्तम पुरुष	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम पुरुष	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम पुरुष	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोतु/शक्नुतात्	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	शक्नुहि/शक्नुतात्	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम पुरुष	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
मध्यम पुरुष	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उत्तम पुरुष	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

V. प्रच्छ् (पृच्छ्) पूछना

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छतु/पृच्छतात्	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

VI. भू (होना) लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

VII. पा (पीना) लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

VIII. दृश् (देखना) लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्याम

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

IX. स्था (बैठना) लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठ	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यम पुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम पुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

X. नश् (नष्ट होना) लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
मध्यम पुरुष	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उत्तम पुरुष	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
मध्यम पुरुष	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उत्तम पुरुष	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नक्ष्यति	नक्ष्यतः	नक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नक्ष्यसि	नक्ष्यथः	नक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	नक्ष्यामि	नक्ष्यावः	नक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
मध्यम पुरुष	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उत्तम पुरुष	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
मध्यम पुरुष	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उत्तम पुरुष	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

XI. आप् (प्राप्त करना) लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उत्तम पुरुष	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यम पुरुष	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लृट लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उत्तम पुरुष	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
मध्यम पुरुष	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तम पुरुष	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

XII. इष् (चाहना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम पुरुष	ऐच्छः	ऐच्छातम्	ऐच्छत
उत्तम पुरुष	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तम पुरुष	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
मध्यम पुरुष	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तम पुरुष	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

3.2 आत्मनेपद धातु रूप

I. लभ् (प्राप्त करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

II. वृध् (बढ़ना) लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
मध्यम पुरुष	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
उत्तम पुरुष	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्ताम्
मध्यम पुरुष	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्धिष्यसे	वर्धिष्येथे	वर्धिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्धताम्	विर्धेताम्	वर्धन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
मध्यम पुरुष	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि

III. जन् (पैदा होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम पुरुष	जायसे	जायथे	जायध्वे
उत्तम पुरुष	जाये	जायावहे	जायामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
मध्यम पुरुष	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तम पुरुष	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	जनष्यिसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यम पुरुष	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तम पुरुष	जायै	जायावहै	जायामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायरेन्
मध्यम पुरुष	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तम पुरुष	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

3.3 उभयपद धातुएँ

I. याच् (माँगना)

(परस्मैपद)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचति	याचतः	याचन्ति
मध्यम पुरुष	याचसि	याचथः	याचथ
उत्तम पुरुष	याचामि	याचावः	याचामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्
मध्यम पुरुष	अयाचः	अयाचतम्	अयाचत
उत्तम पुरुष	अयाचम्	अयाचाव	अयाचाम

लृट लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	याचिष्यसि	याचिष्यथः	याचिष्यथ
उत्तम पुरुष	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचतु	याचताम्	याचन्तु
मध्यम पुरुष	याच	याचतम्	याचत
उत्तम पुरुष	याचानि	याचाव	याचाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचेत्	याचेताम्	याचेयुः
मध्यम पुरुष	याचेः	याचेतम्	याचेत
उत्तम पुरुष	याचेयम्	याचेव	याचेम

II. याच् (माँगना)

(आत्मनेपद)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचते	याचेते	याचन्ते
मध्यम पुरुष	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उत्तम पुरुष	याचे	याचावहे	याचामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
मध्यम पुरुष	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उत्तम पुरुष	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	याचिस्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
मध्यम पुरुष	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उत्तम पुरुष	याचै	याचावहै	याचामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
मध्यम पुरुष	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उत्तम पुरुष	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

III. कथ् (कहना)

(परस्मैपद)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
मध्यम पुरुष	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उत्तम पुरुष	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यम पुरुष	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम पुरुष	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उत्तम पुरुष	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
मध्यम पुरुष	कथय	कथयतम्	कथयत
उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
मध्यम पुरुष	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उत्तम पुरुष	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

IV. कथ् (कहना)

(आत्मनेपद)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
मध्यम पुरुष	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उत्तम पुरुष	कथये	कथयावहे	कथयामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
मध्यम पुरुष	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वन्
उत्तम पुरुष	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
मध्यम पुरुष	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
उत्तम पुरुष	कथयै	कथयावहै	कथयामहे

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
मध्यम पुरुष	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उत्तम पुरुष	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

V. नी (ले जाना) परस्मैपद

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयति	नयतः	नयन्ति
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथः	नयथ
उत्तम पुरुष	नयामि	नयावः	नयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यम पुरुष	अनयः	अनयतम्	अनयत
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यम पुरुष	नय	नयतम्	नयत
उत्तम पुरुष	नयानि	नयाव	नयाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
मध्यम पुरुष	नयेः	नयेतम्	नयेत
उत्तम पुरुष	नयेयम्	नयेव	नयेम

VI. नी (ले जाना) आत्मनेपद

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयते	नयेते	नयन्ते
मध्यम पुरुष	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उत्तम पुरुष	नये	नयावहे	नयामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
मध्यम पुरुष	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उत्तम पुरुष	अनये	अनयावहि	अनयामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
मध्यम पुरुष	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उत्तम पुरुष	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
मध्यम पुरुष	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उत्तम पुरुष	नयै	नयावहै	नयामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
मध्यम पुरुष	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उत्तम पुरुष	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

VII. दा (देना) परस्मैपद

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम पुरुष	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम पुरुष	ददामि	दद्वः	दद्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यम पुरुष	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम पुरुष	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददातु/दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
मध्यम पुरुष	देहि/दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उत्तम पुरुष	ददानि	ददाव	ददाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम पुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम पुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

VIII. दा (देना) आत्मनेपद

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दत्ते	ददाते	ददते
मध्यम पुरुष	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उत्तम पुरुष	ददे	दद्वहे	दद्महे

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदत्त	अददाताम्	अददत
मध्यम पुरुष	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
मध्यम पुरुष	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उत्तम पुरुष	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
मध्यम पुरुष	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	ददै	ददावहै	ददामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
मध्यम पुरुष	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उत्तम पुरुष	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

IX. ज्ञा (जानना) परस्मैपद

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानाति	जानीतः	जानन्ति
मध्यम पुरुष	जानासि	जानीथः	जानीथ
उत्तम पुरुष	जानामि	जानीवः	जानीमः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
मध्यम पुरुष	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उत्तम पुरुष	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
मध्यम पुरुष	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उत्तम पुरुष	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
मध्यम पुरुष	जानीहि	जानीतम्	जानीत
उत्तम पुरुष	जानानि	जानाव	जानाम

लङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
मध्यम पुरुष	जानीयाः	जानीयतम्	जानीयात
उत्तम पुरुष	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

X. ज्ञा (जानना) आत्मनेपद

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीते	जानाते	जानते
मध्यम पुरुष	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उत्तम पुरुष	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
मध्यम पुरुष	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उत्तम पुरुष	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
मध्यम पुरुष	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उत्तम पुरुष	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
मध्यम पुरुष	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम पुरुष	जानै	जानावहै	जानामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
मध्यम पुरुष	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम पुरुष	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

XI. चुर् (चुराना) परस्मैपद

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयानि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

XII. चुर् (चुराना) आत्मनेपद

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उत्तम पुरुष	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
मध्यम पुरुष	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
मध्यम पुरुष	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के प्रयोग में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
मध्यम पुरुष	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. 'अस्' धातु लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है–
(A) एधि (B) आसीः
(C) असि (D) अस्ति

2. निम्नलिखित रूप 'स्था' के विधिलिङ् लकार का है–
(A) तिष्ठतम् (B) तिष्ठेत्
(C) अतिष्ठत (D) स्थास्यति

3. निम्नलिखित रूप 'पा' धातु के लङ् लकार उत्तम पुरुष, एकवचन का है–
(A) अपिबताम् (B) अपिबाम
(C) अपिबम् (D) अपिबत्

4. निम्नलिखित रूप 'स्था' धातु के लोट् लकार प्रथम पुरुष द्विवचन का है–
(A) तिष्ठतम् (B) तिष्ठताम्
(C) तिष्ठाम (D) तिष्ठतु

5. पिबेयम् 'पा' धातु का रूप है–
(A) लट् लकार में
(B) विधिलिङ् लकार में
(C) लोट् लकार में
(D) लङ् लकार में

6. भू धातु को लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप होता है–
(A) भव (B) भवन्तु
(C) भवसि (D) भवतम्

7. निम्नलिखित धातुओं में उभयपद धातु है–
(A) पठ् (B) गम
(C) चुर् (D) लिख्

8. चाहिए के प्रयोग में प्रयुक्त होता है–
(A) लोट् लकार
(B) लङ्लकार
(C) विधिलिङ् लकार
(D) लृट् लकार

9. भूतकाल के अर्थ में प्रयोग होता है–
(A) विधिलिङ् लकार (B) लङ् लकार
(C) लट् लकार (D) लोट् लकार

10. निम्नलिखित में **लङ् लकार उत्तम पुरुष** एकवचन का रूप है–
(A) अपश्यत् (B) अपश्याम
(C) अपश्यम् (D) अपश्यताम्

11. अहं दुग्धं पिबामि। वाक्य के रेखांकित शब्द का लङ् लकार में रूप होगा–
(A) अपिबत् (B) अपिबन्
(C) अपिबम् (D) अपिबः

12. निम्नलिखित में 'दा' धातु का आत्मनेपद रूप है–
(A) अददाथाम् (B) अदत्तम्
(C) अददात् (D) अदद्म

13. 'कथ्' धातु लोट् लकार **मध्यम पुरुष** बहुवचन का रूप है–
(A) कथयध्वम् (B) कथयतम्
(C) कथयताम् (D) कथयेयुः

14. आज्ञार्थक में प्रयोग होता है–
(A) लृट् लकार (B) लट् लकार
(C) लङ् लकार (D) लोट् लकार

15. धेनुः दुग्धं ददाति। वाक्य का रेखांकित रूप धातुपद है–
(A) आत्मनेपद (B) उभयपद
(C) परस्मैपद (D) कोई नहीं

16. निम्नलिखित में लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है–
(A) तिष्ठामि (B) तिष्ठेः
(C) तिष्ठ (D) तिष्ठसि

17. भविष्यत काल के लिए प्रयोग करते हैं–
(A) लोट् लकार (B) लङ् लकार
(C) लट् लकार (D) लृट् लकार

18. 'गम्' धातु के रूप का शुद्ध लकार है–
(A) गमिष्यसि–लृट् लकार
(B) गमिष्यसि–लट् लकार
(C) गमिष्यसि–लङ् लकार
(D) गमिष्यसि–लोट् लकार

19. निम्नलिखित में इष् लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है–
(A) इच्छसि (B) इच्छ
(C) इच्छेः (D) ऐच्छः

20. 'हन्' धातु रूपः लट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचने भवति–
(A) हन्ति (B) हनिष्यति
(C) घ्नन्ति (D) जिघ्रति

21. 'द्रक्ष्यामः' कस्याः धातोः रूपमस्ति ?
(A) दृश् (B) द्रक्ष्
(C) द्राक्षा (D) द्रक्ष्यति

22. 'गायति' इति पदे का धातुः ?
(A) गै (B) गाय
(C) गा (D) गाम्

23. 'अत्ति' इति पदे कः लकारः ?
(A) लट् (B) लृट्
(C) लङ् (D) लोट्

24. 'भिनत्ति' क्रियायाः हिन्दी भाषायां अर्थः अस्ति–
(A) तोड़ना (B) खाना
(C) माँगना (D) चमकाना

25. 'तनुयात्' अत्र कः लकारः ?
(A) लोट् (B) लृट्
(C) लङ् (D) विधिलिङ्

26. 'श्रद्धावान् **लभते** ज्ञानम्।' अत्र स्थूल पदे लकारः अस्ति–
(A) लट् (B) लोट्
(C) लङ् (D) विधिलिङ्

27. संस्कृत में धातु रूप कहते हैं–
(A) संज्ञा पद को (B) कर्मपद को
(C)क्रिया पद को (D) विशेषण पद को

28. 'भू' धातु का लुङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में रूप बनता है–
(A) अभूः (B) अभूत
(C) अभूत् (D) अभूव

29. 'पा धातु परस्मैपदी का लट् लकार प्रथम पुरुष द्वि वचन का रूप है–
(A) पिबसि (B) पिबतः
(C) पिबति (D) पिबामि

30. 'असि' में लकार है–
(A) लट् (B) लिट्
(C) लङ् (D) लुङ्

31. 'धा' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय का योग होकर शब्द बनता है—
(A) धात्वा (B) धायित्वा
(C) धोत्वा (D) हित्वा

32. 'गच्छति' पद है—
(A) गम् + लट् + प्रथम पुरुष एकवचन
(B) गम् + शतृ + सप्तमी एकवचन + पुल्लिङ्ग
(C) गम् + शतृ + सप्तमी एकवचन + नपुंसक
(D) उपर्युक्त सभी

33. 'ज्ञा' धातु लिट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है—
(A) जज्ञौ (B) अज्ञिरे
(C) जज्ञिषे (D) जज्ञाहे

34. कति कालाः सन्ति?
(A) षट् (B) चतस्रः
(C) त्रयः (D) पञ्च

35. विद् धातोः लोट्–उत्तमपुरुष–बहुवचनरूपं किम् ?
(A) अदाम (B) वन्दाम
(C) वेदाम (D) विदाम

36. 'लृट' इति लकारः कस्मिन् काले प्रयुज्यते?
(A) आज्ञायाम् (B) भूतकाले
(C) भविष्यत्काले (D) वर्तमानकाले

37. 'लब्धः' इत्यस्य धातुः कः ?

(A) लब्ध् (B) ब्ध्

(C) लभ् (D) लब्

38. 'धातरि' इत्यस्य मूलपदं किम् ?

(A) धातः (B) धातर्

(C) धातृ (D) धाता

39. 'लृट्' इति लकारः कस्मिन् काले प्रयुज्यते ?

(A) भविष्यत्काले (B) भूतकाले

(C) वर्तमानकाले (D) आज्ञायाम्

40. 'श्रुणोतु' इति क्रियापदस्य लकारः कः ?

(A) लोट् (B) लट्

(C) लिङ् (D) लुङ्

41. 'जानीते' रूप मूल धातु का है–

(A) जा (B) ज्ञा

(C) जान (D) जानना

42. भूतकाल के लिए प्रयोग होता है–

(A) लोट् लकार (B) लृट्लकार

(C) लङ् लकार (D) विधिलिङ्

43. 'भवन्तु' पुरुष व वचन का रूप है–

(A) प्रथम पुरुष एकवचन

(B) मध्यम पुरुष बहुवचन

(C) प्रथम पुरुष बहुवचन

(D) मध्यम पुरुष एकवचन

44. 'गम्' धातु का लट् लकार उत्तम पुरुष द्विवचन का रूप है–

(A) गच्छतः (B) गच्छावः

(C) गच्छथः (D) गच्छति

45. 'लभ्' धातु लृट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन का रूप है–

(A) लप्स्यध्वे (B) लप्स्यते

(C) लप्स्येथे (D) लभेते

व्याख्यात्मक हल

1. (C) 'अस्' धातु लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप 'असि' बनेगा। यथा–असि, स्थः स्थ।

'अस्' का अर्थ (होना) होता है। यह धातु अदादिगण में पढ़ी जाती है।

विशेष–अस् धातु को लृट् आदि 6 लकारों में भू हो जाता है। अतः वहाँ भू के तुल्य रूप चलेंगे।

'एधि' रूप लोट् मध्यम पुरुष के एकवचन में बनता है।

'आसीः' लङ् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है।

'अस्ति' लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।

2. (B) 'स्था' (रुकना) विधिलिंग लकार का रूप 'तिष्ठेत्' है यह रूप विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का है। यह धातु भ्वादिगण की है। विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष–तिष्ठेत्, तिष्ठेताम्, तिष्ठेयुः।

'तिष्ठतम्' रूप लोट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन का रूप है।

'अतिष्ठत्' लङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।

'स्थास्यति' लृट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में बनता है

3. (C) 'पा' धातु के लङ् लकार उत्तम पुरुष एकवचन का रूप 'अपिबम्' बनता है। यथा–अपिबम्, अपिबाव, अपिबाम।

'पा' (पीना) अर्थ में एवं भ्वादिगण में पठित है। 'पा' का लट्, लोट, लङ्, विधिलिङ् में पिब् हो जाता है।

(A) 'अपिबताम्' लङ लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।

(B) 'अपिबाम' रूप लङ् लकार उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है।

(D) 'अपिबत्' लङ लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।

4. (B) 'स्था' धातु के लोट् लकार प्रथम पुरुष द्विवचन का रूप 'तिष्ठताम्' बनता है। यथा–तिष्ठतु' तिष्ठताम्, तिष्ठन्तु। 'स्था' रुकना के अर्थ में तथा भ्वादिगण की धातु है।

'तिष्ठतम्' रूप 'स्था' लोट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन का रूप है।

'तिष्ठाम' लोट् के उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है।

'तिष्ठतु' स्था के लोट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का है।

5. (B) 'पिबेयम्' 'पा' धातु विधिलिङ् लकार उत्तम पुरुष का एकवचन है। यथा–पिबेयम्, पिबेव, पिबेम।

लट् लकार में उत्तम पुरुष में–पिबामि, पिबावः, पिबामः रूप बनते हैं।

लोट् लकार उत्तम पुरुष में–पिबानि, पिबाव, पिबाम बनेंगे।

लङ् लकार उत्तम पुरुष में–अपिबम्, अपिबाव, अपिबाम।

6. (A) 'भव' रूप 'भू' धातु के लोट् (आज्ञा अर्थ) लकार के मध्यम पुरुष एकवचन का है। 'भू' धातु का अर्थ है (होना)।

यह भ्वादिगण परस्मैपदी धातु शब्द है।

'भवन्तु' रूप लोट् प्रथम पुरुष, एकवचन का है।

'भवसि' लट् लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है।

'भवतम्' लोट् लकार मध्यम पुरुष द्वि-वचन रूप है।

7. (C) 'चुर्' धातु (चुराना) के अर्थ में प्रयुक्त होती है। 'चुर्' धातु परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों पदों में प्रयोग होती है। अतः यह उभयपदी धातु है।

'पठ्' धातु के रूप परस्मैपद में बनते हैं। आत्मनेपद में नहीं।

'राम' शब्द रूप है धातु रूप नहीं है। अतः इसके रूप किसी भी पद में नहीं चलते हैं।

'लिख' धातु के रूप भी परस्मैपद में चलते हैं।

8. (C) 'विधिलिङ् लकार' आज्ञा या चाहिए के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

लोट् लकार आज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

लङ् लकार भूतकाल में प्रयोग होता है।

लृट् लकार भविष्यतकाल में प्रयोग किया जाता है।

9. (B) 'लङ् लकार' भूतकाल में प्रयोग किया जाता है।

'विधिलिङ्' चाहिए के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

'लट्' लकार वर्तमान काल के वाक्यों में प्रयोग होता है।

लोट् लकार आज्ञार्थक है।

10. (C) अपश्यम् रूप दृक्ष धातु (देखना) के लङ् लकार उत्तम पुरुष एकवचन का है। यथा–अपश्यम्, अपश्याव, अपश्याम।

अपश्यत् रूप लङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।

अपश्याम लङ् लकार उत्तम पुरुष बहुवचन रूप है।

अपश्यताम् लङ् लकार प्रथम पुरुष द्विवचन का रूप है।

11. (C) 'अहं दुग्धं पिबामि' वाक्य में पिबामि लट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है। इस रेखांकित के स्थान पर लङ् लकार उत्तम पुरुष एकवचन का रूप 'अपिबम्' आयेगा। यह 'पा' धातु है जो 'पीना' हिन्दी अर्थ में प्रयुक्त होती है।

अपिबत् लङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।

अपिबन् लङ प्रथम पुरुष वे बहुवचन का रूप है।

अपिबः लङ लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है।

12. (A) 'अददाथाम्' 'दा' धातु के आत्मनेपद के लङ लकार मध्यम पुरुष का द्विवचन रूप है।

यथा–अदत्थाः, अददाथाम्, अदद्ध्वम्।

'अदत्तम्' 'दा' परस्मैपद के लङ् लकार मध्यम पुरुष का द्विवचन रूप है।

'अददात्' लङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।

'अदद्म' लङ लकार उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है।

13. (A) 'कथयध्वम्' रूप 'कथ्' धातु (कहना) के लोट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन का रूप है।

यथा–कथय, कथयतम्, कथयत।

यह रूप परस्मैपद में बनता है। कथ् उभयपदी है।

'कथयतम्' लोट् मध्यम पुरुष द्विवचन का रूप है।

'कथयताम्' लोट् प्रथम पुरुष द्विवचन का रूप है।

कथयेयुः विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है।

14. (D) लोट् लकार आज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

लृट् लकार भविष्यत काल में प्रयोग होता है।

लट् लकार वर्तमान काल में प्रयोग किया जाता है।

लङ् लकार का प्रयोग भूतकाल के लिए होता है।

15. (B) 'दा' धातु 'उभयपदी' है। 'ददाति' रूप परस्मैपद लट् लकार का प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है। 'दा' धातु जुहोत्यादिगण की धातु है।

यथा–ददाति, दत्तः, ददति।

16. (C) 'स्था' धातु का लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप 'तिष्ठ' है। यथा–तिष्ठ, तिष्ठतम्, तिष्ठत।

'तिष्ठामि' रूप लट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन का है।

'तिष्ठेः' रूप विधिलिङ् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का है।

'तिष्ठसि' रूप लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन है।

17. (D) भविष्यतकाल के लिए 'लृट् लकार' का प्रयोग होता है। भविष्यत काल के लिए तीन लकारों लृट् (भविष्यत्) लुट् (अनद्यतन भविष्यत), लृङ (हेतुहेतुमद भविष्यत्) का प्रयोग होता है।

लोट् आज्ञार्थक होता है।

लङ् लकार भूतकालवाची होता है।

लट् लकार वर्तमान काल का होता है।

18. (A) 'गम्' (जाने के अर्थ में) लृट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन में 'गमिष्यसि' रूप बनता है।

यथा–गमिष्यसि, गमिष्यथः गमिष्यथ।

19. (A) 'इष्' धातु लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप 'इच्छसि' है। 'यथा–इच्छासि, इच्छथः, इच्छथ।

'इष्' धातु तुदादिगण की परस्मैपदी धातु है।

'इच्छ' रूप लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है।

'इच्छेः' रूप विधिलिङ् लकार मध्यमपुरुष एकवचन का है।

'ऐच्छः' रूप लङ् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का है।

20. (C) 'हन्' धातु लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप 'हनन्ति' बनता है। यथा–हन्ति, हतः, हनन्ति।

'हन्' अदादिगण की धातु है।

'हन्ति' लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।

'हनिष्यति' रूप लृट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का है।

'जिघ्रति' रूप 'घ्रा' धातु लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।

21. (A) 'दृश्' धातु के लृट् लकार के उत्तम पुरुष बहुवचन में 'दृक्ष्यामः' रूप बनता है।

यथा–द्रक्ष्यामि, द्रक्ष्यावः, द्रक्ष्यामः।

'दृश्' धातु भ्वादिगण की धातु है इसके रूप भू के तुल्य चलते हैं, परन्तु लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में दृश् का पश्य हो जाता है।

22. (A) 'गै' धातु के लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में 'गायति' शब्द बनता है। यथा–गायति, गायतः, गायन्ति।

'गै' भ्वादिगण की परस्मैपदी धातु है। इसका अर्थ 'गाना' होता है।

23. (A) 'अत्ति' रूप 'अद्' धातु के लट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है। यथा–अत्ति, अन्तः अदन्ति।

'अद्' धातु अदादिगण परस्मैपदी है। 'अद्' का अर्थ होता है–'खाना'।

लृट् लकार प्रथम पुरुष में–अत्स्यति, अत्स्यतः, अत्स्यन्ति।

लङ् लकार में–आदत्, आत्ताम्, आदन्। रूप चलेंगे।

लोट में अद् के रूप–अत्तु, अत्ताम्, अदन्तु।

24. (A) 'भिनत्ति' शब्द 'तोड़ना' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

'भिद्' धातु के लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में भिनत्ति' रूप बनता है। 'भिद्' धातु रूधादिगण की उभयपदी धातु है।

25. (D) 'तन्' धातु के विधिलिङ् लकार के प्रथम पुरुष एकवचन में 'तनुयात्' रूप बनता है।

यथा–तनुयात्, तनुयाताम्, तनुयुः।

'तन्' धातु का अर्थ 'फैलाना' है यह धातु तनादिगण की उभयपदी धातु है।

लोट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में 'तनोति' रूप बनता है।

लृट् में प्रथम पुरुष एकवचन में 'तनिष्यति' रूप बनता है।

लङ् के प्रथम पुरुष एकवचन में 'अतनोत्' रूप बनेगा।

26. (A) 'श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्' वाक्य में 'लभते' स्थूल पद है जिसमें 'लभ्' धातु 'पाना' के अर्थ में प्रयुक्त है तथा यह 'लट्' लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है। 'लभ' धातु आत्मनेपदी एवं भ्वादिगण पठित है। यथा–लभते, लभेते, लभन्ते।

लोट् प्रथम पुरुष एकवचन में 'लभताम्' रूप बनेगा।

लङ प्रथम पुरुष में–अलभत, अलभेताम्, अलभन्त रूप चलेंगे।

विधिलिङ प्रथम पुरुष में–लभेत, लभेयाताम्, लभेरन्।

27. (C) संस्कृत में क्रिया के वाचक (मूल शब्द) को धातु कहते हैं।

यथा–भू, गम्, पठ्, आदि।

संस्कृत व्याकरण में लगभग 2000 धातुएँ हैं, उनमें से 1943 धातुओं की 'भूवादयो धातवः' सूत्र के द्वारा धातु संज्ञा होती है।

सभी धातुएँ तीन (3) पदों में विभाजित हैं–(1) आत्मनेपदी, (2) परस्मैपदी, (3) उभयपदी।

28. (C) 'भू' धातु के 'लुङ्' लकार प्रथम पुरुष एकवचन में 'अभूत्' शब्द बनता है। यथा–अभूत् अभूताम्, अभूवन्।

'अभूः' लुङ् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है।

'अभूत' शब्द लुङ मध्यम पुरुष बहुवचन का रूप है।

'अभूव' उत्तम पुरुष द्विवचन का रूप है।

29. (B) 'पा' धातु परस्मैपदी का लट् लकार प्रथम पुरुष द्विवचन का रूप 'पिबतः' है।

यथा–पिबति, पिबतः पिबन्ति।

(A) 'पिबसि' रूप लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है।

(C) 'पिबति' लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन रूप है।

(D) 'पिबामि' रूप लट् लकार उत्तम पुरुष का एकवचन रूप है।

30. (A) 'असि' रूप 'अस्' (होना) धातु के लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है। यथा—असि, स्थः, स्थ।

'असि' धातु अदादिगण की परस्मैपदी धातु है।

'अस्' धातु को लृट् आदि 6 लकारों में 'भू' हो जाता है। अतः वहाँ भू के तुल्य रूप चलेंगे।

'लिट्' लकार के मध्यम पुरुष एकवचन में 'अस्' का 'बभूविथ' रूप बनता है।

'लङ्' लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप 'आसीः' है।

'लुङ्' लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप 'अभूः' है।

31. (D) धा धातु से क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होने पर हित्वा शब्द बनता है। 'धा' धातु का हम् आदेश होकर तथा क्त्वा प्रत्यय होकर हित्वा शब्द बनता है।

32. (D) 'गच्छति' पद गम् धातु + लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन से बनता है। इसका रूप है—गच्छति, गच्छतः गच्छन्ति। गम् धातु में शतृ प्रत्यय के योग से—गम् + शतृ = गच्छन् शब्द बनता है। यह सप्तमी एकवचन पुल्लिङ्ग में तथा सप्तमी एकवचन नपुंसकलिङ्ग में बनता है। अतः विकल्प (D) सही है।

33. (A) 'ज्ञा' धातु लिट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन का रूप जज्ञौ होगा। अन्य रूप इस प्रकार हैं—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
म.पु.षे	जज्ञि	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
उ.पु.	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

अतः विकल्प (A) सही है।

34. (C) **त्रयः।**

काल तीन प्रकार के होते हैं—

(1) भूतकाल

(2) वर्तमान काल

(3) भविष्यत् काल।

35. (C) **वेदाम।**

'विद्' धातु (जानना) अदादिगणीय धातु शब्द है।

'विद्' धातु के परस्मैपदी लोट् लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में ''वेदाम'' रूप बनता है।

यथा—वेदानि, वेदाव, वेदाम।

36. (C) **भविष्यत्काले।**

'लृट्' लकार 'भविष्यत्काल' में प्रयोग होता है।

भविष्यत्काल के लिए तीन लकारों (लृट्, लुट्, लृङ्) का प्रयोग होता है। लृट् सामान्य भविष्यत् है, सभी भविष्यत् में हो सकता है। लुट् अनद्यतन (आज को छोड़कर) भविष्यत् में ही होगा। लृङ् हेतुहेतुमद् (ऐसा होगा तो ऐसा होगा) भविष्यत् में ही होगा।

37. (C) **लभ्।**

'लब्धः' रूप 'लभ्' (प्राप्त करना) आत्मनेपदी धातु में क्त प्रत्यय जोड़ने पर बनता है।

क्त एवं क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में होते हैं।

क्त कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में होता है। सम्प्रसारण होता है।

लभ् धातु + क्त = लब्धः (अतः इसमें क्त प्रत्यय है तथा लभ् धातु है।)

38. (C) **धातृ।**

'धातरि' शब्द 'धातृ' ऋकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा, मूलरूप की सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है—

यथा—धातरि धात्रोः धातृषु।

39. (A) **भविष्यत्काले।**

प्रत्येक क्रिया पद (धातु रूप) दश लकारों (कालों) में विभक्त होता है। उनमें से एक है—'लृट्' लकार जोकि 'भविष्यत्काल' में प्रयोग किया जाता है। **यथा**—भू (धातु) —प्र.पु.—भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति।

40. (A) **लोट्।**

श्रु–शृ (सुनना) परस्मैपदी धातु के लोट् लकार के प्रथम पुरुष एकवचन में 'शृणोतु' शब्द बनता है।

यथा—शृणोतु शृणुताम् शृण्वन्तु।

41. (B) 'जानीते' रूप 'ज्ञा' मूल धातु का रूप है। 'ज्ञा' धातु क्रियादिगण में पढ़ी जाती है। 'ज्ञा' धातु का 'जानीते' रूप आत्मनेपद लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का है। 'ज्ञा' का अर्थ 'जानना' होता है।

विशेष—ज्ञा धातु को परस्मैपद व आत्मनेपद में लट्, लोट्, लङ् विधिलिङ में 'जा' हो जाता है।

'जा' हिन्दी अर्थ 'जाना' में प्रयुक्त होता है।

'जान' भी हिंदी शब्द है।

'जानना' शब्द का अर्थ किसी वस्तु के बारे में अवगत होना होता है।

42. (C) भूतकाल के लिए 'लङ्' लकार का प्रयोग होता है। लङ् लकार अनद्यतन भूतकाल में होता है। आज का भूतकाल होगा तो लङ् नहीं होगा, अपितु लुङ् होगा, लुङ् सभी भूतकालों में हो सकता है। लिट् लकार केवल अनद्यतन परोक्षभूत में होता है।

लोट् लकार 'आज्ञार्थक' होता है।

लृट् लकार (भविष्यत काल) के लिए प्रयोग होता है। भविष्यत काल के लिए भी तीन लकार प्रयोग होते हैं—

1. लृट्, लुट्, लृङ।

43. (C) 'भवन्तु' रूप लोट् लकार (आज्ञा अर्थ) के प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है। इसके रूप निम्न प्रकार से चलेंगे—

प्रथम पुरुष–भवतु, भवताम्, भवन्तु। इसकी मूल धातु 'भू' है।

प्रथम पुरुष एकवचन में 'भवतु' रूप चलता है।

मध्यम पुरुष बहुवचन में 'भू' धातु लोट् लकार में 'भवत' रूप बनता है।

मध्यम पुरुष एकवचन में 'भव' शब्द बनता है।

44. (B) 'गम्' धातु का लट् लकार उत्तम पुरुष द्विवचन में 'गच्छावः' रूप बनता है। यथा–गच्छामि, गच्छावः, गच्छामः।

'गम्' धातु (जाना) अर्थ में प्रयुक्त होती है एवं भ्वादिगण में पठित है। 'लट्' वर्तमान काल में प्रयोग होता है।

विशेष–'गम्– धातु को लट्, लोट्, लङ् विधिलिङ् में **'गच्छ'** हो जाता है।

'गच्छत' रूप लोट् लकार के मध्यमपुरुष बहुवचन में बनता है। 'लोट्' लकार आज्ञार्थक होता है।

'गच्छथः' रूप लट् (वर्तमान काल) के मध्यम पुरुष द्विवचन का रूप है।

'गच्छति' रूप लट् लकार के प्रथम पुरुष एकवचन का है।

45. (A) 'लभ्' धातु लृट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन का रूप 'लप्स्यध्वे' है। 'लभ्' धातु का अर्थ (पाना) है। यह धातु भ्वादिगण में पठित है। 'लप्स्यध्वे' रूप आत्मनेपद में बनता है।

(B) 'लप्स्यते' रूप लृट् लकार प्रथम पुरुष का एकवचन रूप है।

(C) 'लप्स्येथे' रूप लृट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन में बनता है।

(D) 'लभेते' रूप परस्मैपद लट् लकार का प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।

❐❐